मनुष्य बनो
انساں
BE MAN
संरक्षक व संस्थापक
वार्षि
४-५०
परम संत:- दयाल फ़क़ीर चन्द जी महाराज

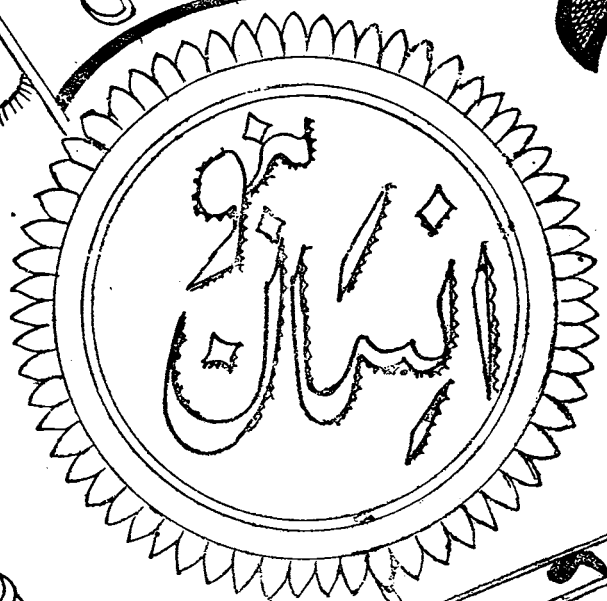

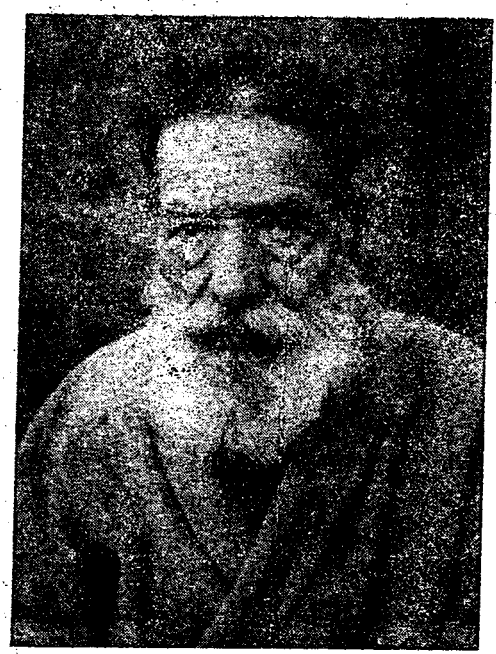

परम पुरुष पूरन धनी परम दयाल फकीर साहब जी महाराज
मानवता मन्दिर होशियारपुर

❋ मनुष्य बनो ❋

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदः पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

वर्ष १६	सितम्बर १६७१ क्वार सं० २०२८ वि०	सं० १२/२२७

❋ विनती ❋

तू दया का रूप प्यारे, तू दया भण्डार है ।
कर दया दृष्टि दयामय, तुझ से ही अधिकार है ॥
संत सतगुरु तुझको कहते, हैं नहीं मैं जानता ।
मेरे अनुभव में दया, करुणा का तू अवतार है ॥
मेरे दाता शीश पर, मेरे दया का हाथ रख ।
तू है दानी दीनबन्धु, जगत का दातार है ॥
काम करता मैं रहूँ, स्वामी तेरा निष्काम बन ।
आस है तेरी दया की, और नहीं कोई जतन ॥
मेरे दाता दीन हूँ, आधीन हूँ मैं सर्वदा ।
यह दया कर तेरी बाणी, का रहेश्र वण मनन ॥
आपका है आसरा, अरु आपका विश्वास है ।
राधास्वामी तारिये, 'मीतल' तुम्हारा दास है ॥

—:❋❋:—

पहिले यह सूचनायें पढ़ लीजिये

परम पूज्य परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज ने मुझको आज्ञा दी है कि 'मनुष्य बनो' का कार्य मैं करूँ। उनकी आज्ञा शिरोधार्य है। अपने प्रिय बन्धुओं से भी प्रार्थना करता हूँ कि वे भी अपनी शुभ भावनायें मेरे प्रति रक्खें और इसके प्रचार में सहायक बनें ताकि इस पत्र का कार्य सुचारु रूप से चल सके और मैं आपकी सेवा भली प्रकार कर सकूं।

—देवीचरन मीतल
लेखराजनगर, अलीगढ़

इस अंक के साथ हम 'मनुष्य बनो' का वर्ष पूरा कर रहे हैं। जुलाई अगस्त के अंक पहिले सब को भेजे जा चुके हैं। अब प्रार्थना है कि आप अपना चन्दा तुरन्त मनीआर्डर से नीचे लिखे पते पर भेजदें। अभी बहुत से ग्राहकों पर चन्दा बाकी पड़ा हुआ है। आगे भी इसी पते पर अपना मनीआर्डर भेजा करें। और अपना पता साफ-साफ लिखकर भेजदें। जिन पर चन्दा बाकी है और अभी देर में भेजेंगे वह पत्र द्वारा सूचना देदें वर्ना पत्र भेजना बन्द करना पड़ जायगा।

—देवीचरन मीतल
शिव भवन लेखराजनगर, अलीगढ़

अगला अंक अक्टूबर व नौवम्बर मास का एक होगा। जो इसके बाद ही अगले माह में प्रकाशित होगा।

जब हमारे पाठक हिन्दी पढ़ लेते हैं तो हम भी पत्र व्यवहार हिन्दी में ही करेंगे और हिन्दी में ही उत्तर देंगे।

जिन ग्राहक महोदयों के पत्र श्री मुंशीलाल जी विश्वप्रेमी की आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना के आये हैं हम उनके आभारी है।

शोक समाचार

श्री मुंशीलाल जी 'विश्वप्रेमी' अब हमारे बीच में नहीं रहे। हमारे प्रेमी पाठक तथा समस्त सम्बन्धी उनके प्रेम से वंचित हो गये। मैं स्वयं उनको अपना बुजुर्ग मानता था मगर मालिक की मौज कि उनको हम से छीन लिया।

उन्होंने 'मनुष्य बनो' का कार्य जिस प्रेम और लगन के साथ किया वह सराहनीय है। अपना सारा समय इसी में लगाते थे और लोगों से मिलना जुलना तथा आना जाना भी बहुत कम कर दिया था। एक तरह से उनका जीवन एक सन्यासी की तरह था। परमपूज्य महर्षि शिवप्रतलाल जी के प्रति उनका अगाध प्रेम था। और महर्षि जी प्रति वर्ष उनके यहां ठहरते और सत्संग कराते थे। उनके चोला छूटने के कई बर्ष बाद परमपूज्य परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज के सम्पर्क में आ गये और उनके सच्चे प्रेमी रहे। महाराज जी की भी उन पर अति कृपा थी। इस प्रकार मनुष्य बनो' का कार्य अन्त समय तक करते रहे और क्षण मात्र में बिना कुछ कहे सुने कूच कर गये। मालिक से मेरी यही हार्दिक प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति दे और अपने गोद में विश्राम दे। उनकी जीवनी शीघ्र ही 'मनुष्य बनो' में प्रकाशित की जायेगी।

—देवीचरन मीतल

संदेश

[ले० परमसंत परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज]

(अलीगढ़ २३—६—७१)

मैं आज विश्वप्रेमी मुंशीलाल जी के स्वर्गवास होने के सिलसिले में व 'मनुष्य बनो' पत्र के बारे में कुछ सोच विचार करने के लिये लखनऊ श्रीराम के पास होता हुआ देवीचरन के मकान पर हूँ। छोटी उम्र से अपने आधार, मालिक या राम कहलो, अनामी कहलो अल्लाह कहलो, राधास्वामी कहलो अथवा कोई और नाम रखलो, की खोज में निकला था। मेरी खोज की भावना मुझको सन् १९०५ई० में दातादयाल हुजूर महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने उस देश में जाने, पहिचानने और रहने के लिये अपनी शरण प्रदान की मगर उस मालिक के देश का पूरा अनुभव नहीं होता था। यह काम जो गुरुयायी का सत्संग कराने व नाम दान देने का मुझको दिया गया, यह उस देश में जाने के लिये रास्ता निकालने को दिया गया था। साथ ही मुझको उन्होंने आज्ञा दी थी कि निबल, अबल और अज्ञानी जीवों की सहायता तथा जगत कल्याण का काम करना। इसके अतिरिक्त जीवों को निज घर जाने या भवसागर से पार करने का आदेश दिया था। निज घर का पता तो मुझको उन सत्संगियों से मिला जो मुझसे यह कहते हैं कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रगट होकर उनको हिदायत करता है या मरते समय ले जाता है या जाग्रत में चमत्कार दिखाता है। चूँकि मैं नहीं होता तो मैं उस असली देश को पाने और जानने पहिचानने के लिये अपने मन के जितने विचार, रूप रंग मेरे अन्तर में चाहे दुनियां के हों या

भक्ति के या योग के, उनको छोड़कर अपनी सुरत से जो असल में मेरा रूप है उसकी खोज करता चला आ रहा हूँ। प्रकाश देखता हूँ, शब्द सुनता हूँ। चूँकि प्रकाश और है और प्रकाश को देखने वाली चीज कोई और है, शब्द और है और शब्द को सुनने वाली कोई चीज मेरे अन्तर और है। जब मेरी सुरत उधर जाती है तो क्या हो जाता है। अपने देह, मन, विचार, प्रकाश और शब्द को भूलकर वहां चला जाता हूँ जहां सिवाय खामोशी, अकहपने, अगाधपने, अनामीपने के कुछ नहीं होता है। इस अनुभव के आधार पर मैं मजबूर हुआ हूँ कि उन संतों के आगे जिन्होंने इस अन्तिम अवस्था का इशारा किया, सिर झुकाऊँ।

अब दातादयाल की आज्ञा पालन में, ताकि जीवों का कल्याण हो, उनको इस शरीर में रहते हुये सुख शान्ति मिले, यह काम करता हूँ। उस आज्ञा को पालन में उन्होंने आप सत्संग में कहा था कि फकीर जमाना बदल जायगा, मजहब मिल्लत खतम हो जायेंगे, तुम शरीर छोड़ने से पहिले, तालीम को बदल जाना। इसलिये मौज ने विश्वप्रेमी मुंशीलाल को मेरे सम्पर्क में लगाया। उस पवित्र आत्मा ने १७-१८ साल मेरी विचारधारा को 'मनुष्य बनो' के रूप में प्रकाशित किया और उसे चलाया। मौज मालिक ! इस सिलसिले को जारी रखने के लिये देवीचरन के पास आया या मानवता मंदिर का ट्रस्ट अब यह काम कर सकता है। पहिले नहीं कर सकता था। मगर मैं इन्सान हूँ। जितना जितना मेरा सम्बन्ध जिस जिस के साथ रहा दाता की तरह उसे निभाने की कोशिश की। देवीचरन को मैंने तमाम तहरीरात का कापी राइट दिया हुआ है। इच्छा है कि 'शिव' मासिक पत्र के अलावा वह 'मनुष्य बनो' के काम को भी चालू रख सके तो रक्खे।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि यहां हजारों गुरु हैं, हजारों पंथ हैं, क्या उनका काम कम है, जो तू मुफ्त में सरदर्दी लेता है।

मैं अपने कर्तव्य को निभाने को यह काम करता हूँ। ऐ भारत वालो! यह संसार मनोमय है। जैसा ख्याल वैसा हाल। जैसी मति वैसी गति। जैसी करनी वैसी भरनी। मैंने अपने जीवन में गृहस्थी की हैसियत में सच्चे बाप व सच्चे पुत्र, सच्चे शिष्य और सच्चे गुरु के यह अनुभव किया है और मैं देखता हूं कि जहां हम गृहस्थी, पोलीटीकल लाइन वाले अपने स्वार्थ के लिये अज्ञान के वश हेरा फेरी, धोखा फरेब करके अपनी जीवन यात्रा अपने सुख के लिये चलाते हैं, वहां यह धर्म पंथ वाले गुरु, आचार्य धर्म के कामों में इतना धोखा फरेब करते हैं कि जीवों को अज्ञान में रखकर उनके अज्ञान का अनुचित लाभ उठाया जा रहा है। यही कारण है कि संसार में इतने धर्म पंथ; इतने गुरु, इतने धर्म स्थान होते हुये भी इस संसार में शान्ति का नाम निशान नहीं है। चूँकि मेरे जिम्मे जगत कल्याण और निबल अबल और अज्ञानी जीवों की सहायता का काम दाता-दयाल ने मौज आधीन या मेरे पिछले कर्मों के अनुसार दिया था इसलिये मैंने ३०-३२ साल से इस काम को किया है, और इस सचाई को प्रगट करता चला आ रहा हूँ। ऐ इंसान! इस दुनियां में रहते हुये तेरा कल्याण तेरे कर्म ने, तेरे ख्याल ने, तेरी वासनाओं ने तथा तेरे आचरण ने करना है। गुरु ने केवल तेरा पथ-प्रदर्शक बनना है। जिन लोगों ने मेरा साहित्य पढ़ा है या पढ़ते हैं उन्होंने मेरे इस काम को बहुत ही सराहा है। 'मनुष्य बनो' पत्रिका ने १८-२० साल में शंका भ्रम दूर किये हैं और धार्मिक स्वतन्त्रता तथा मानव जाति की एकता का ख्याल दिया है इसलिये मैं देवीचरन को कहता हूँ कि जो कुछ भी हो वह इस सिलसिले में मासिक पत्र 'शिव' या 'मनुष्य बनो' में अपनी नीयत को प्रगट करदे जिससे पाठकों को यह विश्वास हो जाय और इस सत्य के प्रचार से मनुष्य को असलियत, सचाई और शान्ति मिल सके।

इस कबीर के शब्द में उस देश का उल्लेख है। बहुत वर्षों से

मुझे यह ज्ञान है कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, मनुष्य जो सोचता है, देखता है, उसके बाह्य प्रभाव उसके दिमाग पर पड़ते हैं। उन प्रभावों को सत्य समझकर दुख और सुख उठाता है। तुम लोग सिनेमा देखते हो। जो कुछ पर्दे पर आता है क्या वह वास्तव में है ? नहीं। वह दृश्य तो फिल्म का है। उसके पीछे प्रकाश होता है। वह मनुष्य को दिखाई पड़ता है। वह जो इस रहस्य से अनजान हैं वह उन दृश्यों को देखकर प्रभावित होते हैं। कोई रोता है कोई खुश होता है। ऐसे ही मनुष्य के चित्र गुप्त के ऊपर इस जन्म के तथा पिछले जन्म के संस्कार पड़े होते हैं। सुरत उनको देखकर उन्हें सत मानती है और कभी दुखी होती है कभी सुखी होती हैं। यही भव-सागर का जाल है। यदि उससे कोई निकल सकता है तो सतगुरु के उपदेश से निकल सकता है।

यह है सच्चा ज्ञान जो मैं बहैसियत संत सतगुरु वक्त अधिकारी जीवों को निकलने को देता हूँ। इस कर्म से अपने तीनों कर्तव्यों को जो दातादयाल ने लगाये बड़ी सत्यता, निष्कामता, निष्कपटता के साथ सत्संगों में व 'मनुष्य बनो' 'शिव' 'दयाल' मासिक पत्रों व 'प्रदीप' पत्र द्वारा प्रगट किया। दुनियां के बड़े बड़े अज्ञानी जीवों को इस गलत गुरु इज्म से बचाने की कोशिश की। मैं डेरों, मंदिरों, केन्द्रों के खिलाफ नहीं हूँ। यह संसार के माया देश में आवश्यक वस्तु हैं मगर मैंने यह देखा है कि इन डेरों धामों, मन्दिरों, मस्जिदों को बनाने, कायम रखने के लिये कार्यकर्ताओं ने पर्दादारी, धोखा फरेब, हेरा फेरी से काम लिया है। मेरा अनुभव मुझे कह रहा है कि जब यह इस धोखे, ४२०, पर्दादारी से यह जितने मठ, मन्दिर, मसजिद, गुरुद्वारे बनाये हैं, तो यह नष्ट भ्रष्ट हो जायेंगे। आज पूर्वी बंगाल में क्या हो रहा है। इसका जिम्मेदार कौन है ? पूर्वी बंगाल की जनता जिम्मेदार है। सन् १९४७ में पाकिस्तान बनने पर यह दूसरी जाति वालों को २२ वर्ष तक तंग करके लाखों को बंगाल से हिन्दुस्तान में

ढकेलते रहे। मैं जानता था कि इन पर कोई भारी मुसीबत आयेगी। बाढ़, भूचाल, महामारी आते हैं। इन सब की जिम्मेदारी तुम्हारे विचारों पर है। इन विचारों के आधार पर मैंने यह काम किया है। अगर कोई बुद्धिवान समझता है कि मेरे काम में सत्यता है और इन ख्यालात के प्रचार की आवश्यकता है तो वह मेरे इस काम में मेरा सहायक बने।

ग़जल श्री पीरेमुगां साहब

पाके न कुछ पा सके, समझते हुये न समझा सके।
ज़र्रां ज़र्रा में जलवा नुमां, देखते हुये न दिखा सके॥
कहां तक कहें दायरा ख्याल, मिट के भी न मिटा सके।
दिल के होते कहाँ शान्ति, दिल को दिल में न दिखा सके॥
मनाते रहे देवी देवता, हजरते दिल न मना सके।
लेने की बात रही अलग, हसद व बुग्ज़ न गवां सके॥
चढ़ गया अर्श पे विलाशुभा, बादिल हो जो सर झुका सके।
पाता रहता है 'पीरेमुगां' तबही, मौज मालिक की सदा लगा सके॥

कबीर साहब का शब्द

घूंघट के पट खोल रे, तोहि पिया मिलेंगे।
घट घट के वह साईं रहता, कटुक बचन मत बोल रे॥
धन योवन का गर्व न कीजे, झूठा पचरंग चोल रे।
सुन्न महल में दिया बारले, आसा से मत डोल रे॥
जोग झुगत से रंग महल में, पिया पाये अनमोल रे।
कहे कबीर आनन्द भयो है, बाजत अनहद ढोल रे॥

प्रवचन

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज
(बम्बई ४—६—७१)

बावली चिन्ता है कैसी, गुरु तो तेरे पास है ।
उसकी मन में कर तू आसा, और किस की आस है ॥
प्रेम की चूनर पहनले, भक्ति का करले सिंगार ।
ओढ़ चादर शील की, आनन्द सुख की रास है ॥
तुझ में भक्ति प्रेम है, और तुझ में प्रीति प्रतीत ।
तुझ में श्रद्धा तुझ में दृढ़ता, तुझ ही में विश्वास है ॥
नाम क्या तेरा है तेरा, रूप कैसा है सखी ।
क्यों भरम में है पड़ी, यह भरम जम की फांस है ॥
प्रेम में शक्ति है शक्ति, प्रेम की है मूरति ।
प्रेम जिसके मन में आया, स्वामी का वह दास है ॥
अपने घट में देख अपना, आपा से ले उसको परख ।
तुझ में ज्योति ज्ञान गम है, ज्ञान का परकाश है ॥
राधास्वामी की दया से, तू हुई सतसंगिनी ।
सत की संगत रात दिन कर, सत ही स्वांस और भास है ॥

मैं यहाँ कृष्णा (श्रीमती कृष्णा बम्बई) के विवश करने पर आया हूँ। यह होशियारपुर गई थी। मैं अपनी आत्मा से सवाल किया करता हूँ कि तुम यह काम क्यों करते हो ? मेरे जिम्मे गुरु ऋण था। हुजूर दातादयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी ने मुझे यह काम दिया था !

१—निबल, अबल और अज्ञानी जीवों की सहायता करना ।
२—जगत कल्याण का काम करना
३—जीवों को भवसागर से पार ले जाने का यत्न करना ।

उन्होंने कहा था कि फकीर ! इस काम के करने से तेरा अपना

भी कल्याण होगा। मौज से यह शब्द निकला है और मैं उस शब्द के आधार पर कृष्णा को सत्संग कराना चाहता हूँ।

बावली चिन्ता है कैसी, गुरु तो तेरे पास है।

मुझे यह पता नहीं लगता था कि गुरु मेरे पास कैसे हैं। इस काम के करने से मुझे यह पता लग गया कि गुरु हर व्यक्ति के अन्दर रहता है और वह उसका अपना ही प्रेम और विश्वास है। मेरा विश्वास बहुत था लेकिन बहिर्मुखी था। मैं गुरु को लाहोर या राधास्वामी धाम में समझता था। मेरे इस अज्ञान को मिटाने के लिये मुझे यह काम दिया गया था।

देखो! यह आदमी सुरेश आया हुआ है। इसकी माता जो बाहर गांव में रहती है मुझ पर बहुत विश्वास रखती हैं। इसी कारण सुरेश का भी मुझ पर काफी विश्वास है। तुम लोगों को बता रहा हूँ कि गुरु कैसे पास रहता है। यह व्यक्ति इटारसी से होशियार पुर मेरे पास पहुँचा और कहने लगा कि महाराज जी आप बम्बई अवश्य दर्शन दें। इनके घर में ४ मई की शादी थी। मैंने कहा कि मौका मिला तो आऊँगा। कृष्णा ने मुझे यहाँ आने के लिये बहुत जोर दिया। मैंने इसे लिखा कि मैं ४ जून को बम्बई पहुँच रहा हूँ। यद्यपि यह चिट्ठी सबने पढ़ी लेकिन ४ जून के बजाय ४ मई का ख्याल रहा।

सुरेश कहता है कि हमने ४ मई की शादी नियत कर रक्खी थी। इससे दो दिन पहले २ मई को आपका रूप मेरे अन्तर प्रगट हुआ और कहा कि ४ मई का दिन ठीक नहीं है इसलिये उस दिन शादी मत करना। उन्होंने ४ मई के बजाय ६ मई को शादी की तारीख नियत की। चूँकि उन्होंने मेरी बम्बई पहुँचने की तारीख ४ मई गलती से समझी हुई थी इसलिये वह गाड़ी लेकर स्टेशन पर मुझे मिलने गये लेकिन मैं तो वहां पहुँचा नहीं था। जिस गाड़ी से उन्होंने ४ मई को बारात लेकर जाना था उस गाड़ी का एक्सीडेंट हो गया।

और ४—५ डिब्बे नष्ट हो गये और जान मल की बहुत हानि हुई। तो अब इनकी रक्षा किसने की ?

ऐ भारतवर्ष वालो ! यदि मैंने भी वही काम करना होता जो दूसरे महात्मा करते हैं तो मुझे एक नई दुकान खोलने की क्या आवश्यकता थी। मुझे न तो इस घटना का कोई इल्म और न मैं वहाँ गया न इसके स्वप्न में इसे कुछ कहा।

इस भेद को पर्दे में रखकर भारत में हम महात्माओं ने जीवों के अज्ञान का अनुचित लाभ उठाकर अपने आश्रम, डेरे और गद्दियां बनाईं। गलत मान और यश लिया। क्या इस घटना से यह सिद्ध नहीं होता कि वह सहायता करने वाली शक्ति हर एक इंसान के अन्दर रहती हैं। मेरी बात पर अच्छी तरह विचार करो और उसे समझो। गुरु नाम है ज्ञान का, विश्वास का और सार समझ का। मैं संसार को सच्चा ज्ञान दिये जाता हूँ। यदि इन बातों को अपने स्वार्थ के लिये पर्दे में रखता तो लाखों का मालिक होता। दुनियां अंध विश्वास से और अज्ञान से पैसा देती है। मैं अज्ञानी जीवों से पैसा नहीं लेता। हां यदि कोई ज्ञान रखता हुआ मेरी विचारधारा को फैलाने के लिये किसी प्रकार की आर्थिक सहायता करना चाहता है तो मैं उसे स्वीकार कर लेता हूँ।

ऐसी ही घटना कृष्णा के ड्राइवर के साथ हुई। वह कार लिये जा रहा था। उसके पास लायसस नहीं था। पुलिस ने उसे रोकना चाहा। वह गाड़ी को तेज करके लेगया। गाड़ी उलट गई और ड्राइवर की टांग फँस गई। वह कहता है कि कार के अन्दर मेरी फोटो रक्खी थी वह किसी तरह से ड्रायवर के पास आकर गिरी। ड्रायवर को आवाज सुनाई दी कि तुरन्त बाहर निकल जाओ। गाड़ी को आग लग जायगी। दरवाजा बन्द था। न मालुम कैसे स्वय खुल गया। वह बाहर निकल आया और गाड़ी जलकर नष्ट हो गई। पुलिस ड्रायवर को पकड़ कर लेगई और हवालात में बन्द कर

दिया। ड्रायवर कहता है कि बाबा जी ! वहां भी आप का रूप प्रगट हुआ और कहा कि चिन्ता मत करो, तुझे कुछ नहीं होगा। सुबह पुलिस ने उसको छोड़ दिया।

ऐसी अनेकों घटनायें नित्य प्रति सुनने में आती हैं। मैं सच्चा आदमी हूँ। मैं इस गुरुयायी की परवाह नहीं करता। मैं संसार में ज्ञान का अवतार लेकर आया हूँ और संसार में सचाई वर्णन कर जाना चाहता हूँ। अज्ञान की भक्ति से जीव लुटे जा रहे हैं और उनको मूर्ख बनाया जा रहा है। यह सारा खेल अपने ही विश्वास का है।

जाकी रही भावना जैसी।
प्रभू मूरति देखी तिन तैसी॥

मैं यह काम करता हूँ और पुस्तकें लिखता हूँ। चार पत्र भी निकलते हैं। बाहर भी जाता हूँ। ऐसा क्यों करता हूँ ? क्योंकि मेरे जिम्मे ड्यूटी है। क्या ?

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेषा।
दुखी जीव को अंग लगाकर, लेजा गुरु के देसा॥
तीन ताप से जीव दुखी हैं, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी॥

अब यदि ड्रायवर इस ख्याल से मेरी सेवा करता है कि मैं इसके अन्तर प्रगट हुआ और इसको यह बातें कहीं और मैं उससे पैसा लेकर अपने या अपने घरेलू काम में खर्च करूँ तो क्या मैं अपराधी नहीं हूँ। हूँ और अवश्य हूं।

कर्म प्रधान विश्व कर राखा।
जो जस कीन्हसु तस फल चाखा॥

हम दुनियां में जो भी कर्म करते हैं यदि उसमें हमारी नीयत साफ नहीं है तो वह कर्म हमको खा जायगा। बात सच्ची कहता हूँ। कर्म के फल से कोई बच नहीं सकता। दातादयाल कहते हैं—

बावली चिन्ता है कैसी, गुरु तो तेरे पास है।

उसकी मन में कर तू आसा, और किस की आस है !!

गुरु तुम्हारे अपने मन की आस है। तभी तो मैं कहता हूँ कि गृहस्थियों को जीना नहीं आता। हमको चाहिये कि हम अपनी आशा को श्रेष्ठ बनायें। आशावादी होकर जीयें। वह मालिक जो करता है अच्छा ही करता है। 'तेरा भाना मीठा लागे।' कृष्णा ने मुझे बुलाया, इसको सत्संग दिये जाता हूँ। मौज से शब्द भी ऐसा ही निकला है। दातादयाल कहते हैं—ऐ बावली कृष्णा ! वह सहायता करने वाली शक्ति बाहर नहीं है। वह तुम्हारे अन्तर है। वह होशियारपुर आगरे या व्यास में नहीं है और न जंगलों या पहाड़ों पर है। वह तुम्हारे दिल में तुम्हारी सच्ची आस है। दातादयाल मुझे लिखा करते थे—

फकीरा ! गुरु तो तेरे पास।
तेरे तन में तेरे मन में, तेरी सांसों सांस।
गुरु नहीं काशी गुरु नहीं मथुरा, गुरु नहीं कैलाश ॥

तुम लोग धनी हो। आजकल के महात्मा धन इकट्ठा करने के लिये धनी लोगों के पीछे फिरते हैं। मैं धन इकट्ठा करने को नहीं आया हूँ। दाता ने मुझे प्रेम और विश्वास का इतना धन दिया है कि यह कभी समाप्त नहीं होता। मैं तुम्हारे प्रेम की कदर करता हूँ लेकिन तुम्हारी आंखों में मिट्टी डालकर अपना उल्लू सीधा नहीं करना चाहता। तुमको सच्ची बात बतलाई। सच्चे गुरु की ड्यूटी है—

घर में घर दिखलाय दे, सो गुरु चतुर सुजान।
पांच शब्द धुनकार धुन, बाजे शब्द निशान ॥

बाहर का जो गुरु तुमको यह निश्चय करादे कि सब कुछ तुम्हारे अन्तर है, बाहर कुछ नहीं है, उस बाहर के गुरु का नाम सतगुरु है और वह हमेशा तुम्हारे अन्तर रहता है।

नहीं रूप कोई हैं सब रूप तेरे ।
तेरी सब ही प्रजा हैं और भूप तेरे ॥

उस मालिक का और इस सतगुरु का कोई रूप नहीं है। सब ही रूप उसके हैं। केवल एक रूप को पकड़ो। जो आज एक देवी का सहारा लेता है, कल राम का, परसों कृष्णा का फिर हनुमान आदि का, वह किसी का भी नहीं बन सकता। धोबी का कुत्ता घर का न घाट का।

यहां हम एक दूसरे को मिलते हैं। यह पिछले जन्मों का लेना देना है। यह भुगतान करने के बिना गुजारा नहीं है। कोई बाप बन कर लेता है कोई बेटा बनकर लेता है। कोई गुरु बनकर लेता है। कोई कुछ बनकर कोई कुछ बनकर। कोई देता है। यह सब पिछले जन्मों के लेने देने का सम्बन्ध है।

प्रेम की चूनर पहिन ले, भक्ति का शृंगार कर ।
ओढ़ चादर शील की, आनन्द सुख की रास है ॥

आस, विश्वास और श्रद्धा रखते हुए खुशी के साथ अपना जीवन व्यतीत करो। यह विश्वास रक्खो कि वह सतगुरु हमेशा तुम्हारे साथ रहता है। वह शरीर धारी फकीरचन्द तो चोला छोड़ जायगा। दातादयाल चले गये। कबीर, नानक, बाबा सावनसिंह सब चोला छोड़ गये। आते हैं और यहाँ आकर चले जाते हैं लेकिन गुरु अजर अमर और अविनाशी हैं।

गुरु मध्य आदि अनन्त अद्भुत, अमल अगम अगोचरम् ।
बिभु बिरज पार अपार निर्गुन, सगुन शब्द विशेश्वरम् ॥
जेहि मति लखे नहिं गति लखे, सो शुद्ध तत्व विचार है ।
जो चरन कमल को ओट आया, भव से बेड़ा पार है ॥
गुरु विष्णु मूरति शिव की सूरत, गुरु को ब्रह्मा जान तू ।
गुरु ब्रह्म हैं परब्रह्म हैं, यह सोच समझ के मान तू ॥
कर गुरु की संगत रात दिन, नर जन्म अपना सुधार ले ।
दे फेंक माया बोझ सर से, जम का शीश न भार ले ॥

शीश दे तन मन को दे, गुरु भक्ति रतन अमोल ले ।
राधास्वामी भेद बतायें तुझको, हिये तरजू तोल ले ।।

बाहर के पूर्ण गुरु का सत्संग करना चाहिये । मैं उनको गुरु नहीं मानता जो इन बातों का गलत प्रोपेगंडा करके झूंठा मान और झूंठी इज्जत संसार में लेते हैं । दुनियां मूर्ख बनकर उनको गुरु मानती है । यह सब अपने स्वार्थ मन्दिरों, डेरों के लिये फिरते हैं । जीवों के कल्याण के लिये कोई नहीं फिरता । इसलिये अपने मन में हमेशा शुभ विचार और आशा रक्खो । जिसके मन में सच्ची आस और विश्वास है वह कभी दुखी नहीं होता ।

आसकर गुरु की दया की, हो निराश न तू कभी ।
जो निराश हुआ समझ ले, गुरु का दास न तू कभी ।।

इसलिये बार-बार मुझे बुलाने या होशियारपुर आने की आवश्यकता नहीं है । हां लेने देने के व्यौहार के लिये हम आते जाते हैं । आने जाने या मिलने मिलाने में कोई दोष नहीं है । हम सामाजिक जीव है । मैं तुम्हारी आंखों पर पट्टी बांधकर अपना उल्लू सीधा करना नहीं चाहता । यदि तुम्हारा दिल मुझे सच्चा समझता है तो मेरी विचार धारा के प्रचार के लिये जो कोई मानवता मन्दिर की सहायता करना चाहे तो बड़ी खुशी से करे और नहीं चाहता तो न करे ।

तुझ में भक्ति प्रेम है और तुझ में है परतीत प्रीत ।
तुझ में श्रद्धा तुझ में दृढ़ता, तुझ ही में विश्वास है ।।

वेद मंत्र है :—

ओ३म् पूर्ण मदः पूर्णमिदं पूर्णात पूर्ण मुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।

ऐ इन्सान ! तेरे अन्तर सब कुछ भरा हुआ है । तू अपने अच्छे विचारों से अपने आपको अच्छा और बुरे विचारों से अपने आपको बुरा बना लेता है । इसलिये सत्संग की महिमा है ।

बिना सत्संग विवेक न होई ।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ।।

तुलसीदास जी कहते हैं कि सत्संग से विवेक मिलता है शर्त यह है कि कोई आदमी ध्यान से सत्संग सुने ।

सुनो कृष्णा ! यह मत समझो कि मैं तुमसे इसलिये प्रेम करता हूँ कि तुम एक लखपति की स्त्री हो । यह विचार मेरे दिमाग में बिल्कुल नहीं है । मैं तुम्हारे सच्चे प्रेम और सच्चे भाव की कदर करता हूँ और चाहता हूँ कि जिस तरह से मैं स्वतन्त्र हो गया तुम भी स्वतन्त्र हो जाओ । तुमको सच्चा भेद, सच्ची बात बता जाना चाहता हूँ कि जो कुछ है तुम्हारे विश्वास में है । मैंने आप लोगों को कई बार कहा कि मैं कहीं नहीं जाता । अमरीका में, अफ्रीका में और अन्य जगहों पर लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रगट होता है । कभी परीक्षा हाल में किसी लड़के का पर्चा हल करा देता है । कभी किसी को डूबने से बचाता है । इस सुरेश की और तुम्हारे ड्रायवर की घटना तुम लोगों ने सुनली है । कौन जाता है ? यह सारा खेल उसके विश्वास का है ।

पिछले वर्ष प्रभूदयाल (शाहदरा निवासी) बीमार हुआ । वह लिखता है कि बाबा जी मुझे दिल का दौरा हो गया । पांच मिनट तक तो मुझे होश रहा । फिर मैं बेहोश हो गया । तीन घंटे बेहोश रहा । शरीर ठण्डा हो गया । नब्ज भी पीछे हट गई । वह कहता है कि एक काले रंग का खेंचने वाला आया और मुझे लेंचकर ले गया । जिसने उसको लाने को भेजा था उसके सामने पेश कर दिया । इतने में आप आ गये । आप संगमरमर के एक सुन्दर सिंहासन पर विराजमान थे । आपने मुझे बुलाया । आपका चहरा सूर्य की तरह चमकता था । आपने कीमती पोशाक और सोने का ताज पहन रक्खा था । आपने उस आदमी से पूछा कि तुमको किसने कहा कि इसको यहाँ लाओ । वह भागने लगा तो आपने उसे मारा और मुझे कहा

कि तुम वापिस जाओ। पहिले मैं जाऊँगा बाद में तुम जाना।

अब उसने तो लिख दिया लेकिन मैं अपनी आत्मा को बिल्कुल निर्मल रखना चाहता हूं। मैं तो गया नहीं, फिर ऐसा क्यों हुआ? उसके विश्वास ने या उसकी आत्मा ने मेरा रूप धारण किया और उसको सब कुछ कहा। वह जो कहता है कि आपने कहा कि पहिले मैं जाऊँगा और बाद में तुम जाओगे। इसका कारण है कि ९-१० वर्ष हुये वह बीमार हुआ था। उसने मुझे खत लिखा। मैंने उसे उत्तर दिया कि मैं तेरा बड़ा भाई हूँ इसलिये पहिले जाना मेरा काम है। तू अभी नहीं मरेगा। यह जो मैंने उसको ख्याल दिया था उसको मेरी इस बात का विश्वास था और उसके चित्त पर उसका संस्कार था। जब उसकी सुरत शरीर से निकल कर सुप्तमस्तिष्क (Sub-conscious mind) में गई तो जो कुछ वहां मौजूद था वही उसके सामने आया।

गुरु पर सच्चा विश्वास रक्खो। भूल जाओ कि वह होशियारपुर में रहता है या किसी और जगह रहता है। वह तो एक परमतत्व है। वहां तक तो अभी तुम्हारी सुरत जा नहीं सकती। इसलिये पहिले उसका एक रूप बनाओ। जिन लोगों के साथ ऐसी घटनायें हुई हैं वह कहते हैं कि बाबाजी! आप अपने को छिपाते हैं लेकिन मैं झूँठ नहीं बोलता। मैं जब ऐसी बातें सुनता हूँ तो मेरी अपनी बुद्धि काम नहीं करती। मैं आप लोगों को विश्वास दिलाता हूँ कि मुझे उसका कोई इल्म नहीं होता। यह सचाई है। यदि मेरे पास कुछ है तो मुझे इसका ज्ञान नहीं है। यह सब उस मालिक की मौज है।

कबीर साहब कहते हैं:—

साहब से सब होत है, बन्दे से कुछ नाहिं।
राई से पर्वत करे, पर्वत राई माहिं॥
साहब सम समरथ नहीं, गुरुवा गहर गंभीर।
औगुन मेटे गुन गहे, छिनक उतारे तीर॥

ना कुछ किया न कर सका, नहिं करने योग शरीर ।
जो कुछ किया सो हरि किया, भयो कबीर कबीर ।।

पिछली बार इटारसी में मुझे एक आदमी ने ५००) रु० दिये। वहां मुझे एक गरीब आदमी की चिट्ठी आई हुई थी कि बाबा जी! मेरे पास रुपया नहीं है और मेरी लड़की की शादी है। मैंने उसी समय उस रुपये में से दो सौ रुपया भेज दिया। यह लेना देना हमारा संसार का व्यवहार है। न कोई लेता है न देता है। मैं इस बात को समझता हूँ। जो देता है उसी को मिलता है। हमने पिछले जन्म में दिया हुआ है इसलिये हमें मिल भी रहा है। जो देता नहीं उसको मिलता नहीं। तुम लोगों ने झमेला डाल दिया कि अमुक जगह सत्सग करो मगर मेरे सत्संग का अधिकारी है कौन ?

मैं हूँ डाक्टर। गलत विचार जो दूसरों के दिमाग पर पड़े हुये हैं अपनी बाणी का चीरा देकर उनको निकालने की कोशिश करता रहता हूं। आपरेशन कराने से लोग घबराते हैं लेकिन आपरेशन दूसरों के लाभ के लिये किया जाता है। इसी तरह जो गलत ख्याल या बुरे सस्कार (bad Impressions) दिमाग पर पड़े हुये हैं उनको निकाल देना चाहता हूँ। इससे दो लाभ हो जाते हैं। एक तो तुमको यह विश्वास हो जाये कि तुम अपने अन्तर में अपना जीवन बना सकते हो और दूसरे तुम अज्ञान में आकर लुटोगे नहीं। धर्म और धार्मिक पथ-प्रदर्शकों ने निर्दोष और अज्ञानी लोगों को बुरी तरह लूटा है।

साहब से सब होत है, बन्दे से कुछ नाहिं ।
राई से पर्वत करे, परवत राई माहिं ।।

गुरु में गम्भीरता होती है और वह रहस्य को जानता है। वह दूसरों के अवगुण नहीं देखता। अवगुण सब में होते हैं किन्तु गुरु दूसरों के ऐबों पर ध्यान नहीं देते हैं। गुरु अपना प्रेम अपना शुभ विचार अपनी रेडियेशन देकर दूसरों के दिमाग पर जो संस्कार पड़े

हुये होते हैं उनको दूर करता है। हमारे मन की तरंगे भी भव-सागर हैं क्योंकि मन महा चंचल होने के कारण कभी इधर कभी उधर दौड़ता है। इसलिये गुरु अपनी विचार धारा से उनके गलत ख्यालों को दूर कर देता है और उसकी बुद्धि को निर्मल कर देता है।

मैं भी अगर इस सचाई का पर्दा रखता तो दूसरे महात्माओं की तरह तुमको लूट लेता। तुम लोग अज्ञान में अपने ही आप देते कि देखो बाबा कितनी करनी वाला है। हमको वहाँ से बचा लिया वरन् हम भी उस गाड़ी के एक्सीडेन्ट में मर जाते जो ४ मई को हुआ है। वह जो रक्षक है वह हर समय तुम्हारे अन्दर में रहता है। पता नहीं इस चोले को प्राप्त करने के लिये मैंने कितने जन्म लिये। इस चार दिन के जीवन के लिये क्यों पाखड का जाल फैलाऊं और क्यों तुम्हें उसमें फंसाऊं। मैं तुम लोगों को स्वतन्त्र करने के लिये आया हूं।

न कुछ किया न कर सका, न करने जोग शरीर।
जो कुछ किया सो हरि किया, भयो कबीर कबीर॥

कबीर ने कितनी सच्ची बात कही है कि जो कुछ किया सो हरि ने किया है। आगे कहते हैं।

जो कुछ किया सो तुम किया, मैं कुछ किया नाहिं।
कैसे आँखों में आया, तुम ही थे मुझ माहिं॥

हमारे अन्तर में जो हमारी सुरत है उस मालिक की अंश है। किरण उस सूर्य की और बूंद उस समुद्र की अंश हैं मगर अज्ञान वश तुम लोगों को यह पता नहीं है।

तुम लोगो को वही मिलेगा जो तुम सोचते हो और विचार करते हो और आस करते हो। दातादयाल महर्षि शिव कहा करते थे कि 'जैसी करनी वैसी भरनी' जैसा ख्याल वैसा हाल, जैसी मति वैसी गति, जैसी आंशा वैसी वासा, जैसा अन्न वैसा मन"। इसलिये अपने विचार व्यवहार और आहार को ठीक रक्खो।

बावली चिन्ता है कैसी, गुरु तो तेरे पास है।
उस की मन में कर तू आसा, और किसकी आस है॥

उस मालिक की आशा करो। वही तुम्हारी आस है। जैसी तुम्हारी आशा होगी, वैसा ही तुमको फल मिलेगा।

प्रेम की चूनर पहिनले, भक्ति का श्रंगार कर।
ओढ़ चादर शील की, आनन्द सुख की रास ले।
तुम में भक्ति प्रेम है और तुझ में है परतीत प्रीति।
तुझ में दृढ़ता तुझ में श्रद्धा, तुझ में ही विश्वास हैं।

सब कुछ तुम्हारे अपने अन्तर में है। अपने अन्तर ही विश्वास रक्खो। कृष्णा कहती है कि इस के पति पर कोई केस बन गया। इसने सच्चे हृदय से प्रार्थना की तो उसकी आस पूरी होगई। मैं तुमको स्वतन्त्र करना चाहता हूँ। नहीं तो क्या होगा ? एक गुरु मरगया तो तुम लोग दूसरे के पास जाओगे। दूसरा मरगया तो तीसरे के पास जाओगे किन्तु मन को शान्ति कहीं नहीं मिलेगी और भटकते फिरोगे। क्यों ? क्योंकि पूरा गुरु नहीं मिला।

प्रेम में शक्ति है, शक्ति प्रेम की है मूरति।
प्रेम जिसके मन में आया, स्वामी का वह दास है।
जिसके हृदय में प्रेम आजाता है वही तो सच्चा दास है।
नाम क्या तेरा है तेरा, रूप है कैसा सखी।
क्यों भरम है पड़ी, यह भरम जग की फांस है।

भ्रम में मत पड़ो। अपने मन में शंकायें मत आने दो। मैं चाहता हूँ कि तुम हमेशा के लिये स्वतन्त्र हो जाओ, व्यवहारिक दृष्टि से आप चाहो मुझे मिलो। हम सामाजिक जीव हैं। मैं तुमको या और किसी को अपने जाल में फंसाना नहीं चाहता। ऐ कृष्णा ! यह सत्संग तेरे लिये दे रहा हूँ।

अपने घर में देख अपना, आपा ले उसको परख।
तुझ में ज्योति ज्ञान गम है, ज्ञान का परकास हैं॥

सब कुछ तुम्हारे अन्तर में है। हमेशा यह ख्याल करो कि उस मालिक के सच्चे पुत्र हैं। सेवक मार खाता है लेकिन पुत्र को मार नहीं पड़ती। तुम्हारा नौकर यदि गलती करता है तो तुम उसे क्षमा नहीं करोगे। हो सकता है कि उसको उसी समय निकाल भी दो। लेकिन तुम्हारा लड़का गलती करता है तो तुम उसे क्षमा कर देते हो। यदि लड़का सौ गलतियाँ भी करता है तो भी बाप की सम्पति का अधिकारी है। इस लिये बेटे बनकर मालिक के घर में रहो।

सेवक बनना कठिन है। मैं सेवक बना। दातादयाल ने काम दिया था। मैं उनकी आज्ञा के पालन में घूमता फिरता हूं वरन् इस इस ८४ वर्ष की आयु में क्यों धक्के खाता फिरता। मुझे इस गुरु-यायी से क्या लेना है। सेवक हूँ। इसलिये आज्ञा माननी पड़ती है। इसलिये पुत्र की हैसियत में जीवन गुजारो।

राधास्वामी की दया, से तू हुई सत्संगनी।
सत की सगत रातदिनकर, सत ही साँसों सास है॥

तू सत्संगिनी बन गई। मैं स्वय सत का रूप हूँ। मेरी सगत से समझ बूझ वाले लोगों के भ्रम और सशय चले जाते हैं। इनको दृढ़ता और शान्ति मिलती है। यह शब्द मौज से निकला है। मैंने नहीं निकाला है। गुरु को हमेशा अपने पास समझो। यदि मुझे ही गुरु मानती हो तो विश्वास रक्खो कि मैं सदा तेरे पास रहता हूँ। मैं तेरे ड्रायवर को बचाने को नहीं गया। चूंकि उसका मुझ पर विश्वास था इसलिये उसके विश्वास ने मेरा रूप धर कर सारा काम किया।

प्रवचन

परम सन्त दयाल फकीर चन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर १२—१०—७१

ममता जाती मेरे मन से ।।

मेरा कोई न मैं हूँ किसी का, मुझ में कुछ नहीं मेरा ।
समझ बूझ ऐसी काम न आई, करता हूँ मेरा मेरा ।।
मिटे न ये लाख जतन से ।। ममता ।।

साथ न लाया अपने कुछ भी, साथ नहीं कुछ जावे ।
बीच की दशा में साथ हुआ है, समझ में बात न आवे ।।
मनन श्रवण के कथन से ।। ममता० ।।

मेरे तेरे पन का बन्धन, मिथ्या बन्ध बधाना ।
यह बन्धन काटे नहिं कटता, कितना उपाय करना ।।
जोग जुगति साधन से ।। ममता ।।

क्या ले आया क्या ले जायगा, यह जाने सब कोई ।
जान जान अनजान बना है, अचरज अचरज होई ।।
छुटा नहीं कोई बन्धन से ।। ममता० ।।

तन मन धन साधन में ममता, योग ज्ञान में ममता ।
राधास्वामी अब तो दया करो तुम, चित में आवे समता ।।
जाय ममता जीवन से ।। ममता० ।।

मैं हमेशा कहा करता हूँ कि मैं गिरता रहता हूँ। आज घर से आरहा था तो किसी ने मुझे बताया कि डा० ज्ञानचन्द जो पहिले हमारे अस्पताल में काम करता था अब वह यहां हमारे पास ही एक फ्री होमयो पैथिक अस्पताल खोल रहा है या कालिज खोल रहा है। मेरे दिल में ख्याल आया कि इसका यहाँ फ्री अस्पताल होने से हमारे पास हमारे अस्पताल में जो रोजाना ८०-९० रोगी या अन्य निर्धन लोग इलाज के लिये आते हैं, होसकता है कि उधर

जायें और इस तरह हमारे मन्दिर के कार्य को हानि होगी। गंगाराम जो वहां का सेक्रेटरी बना हुआ है वह मुझ से फ्री अस्पताल के लिये आशीर्वाद मागता है। मैंने गंगाराम से कहा कि मैं फ्री अस्पताल के लिये आशीर्वाद नहीं दूंगा।

कहतो मैंने गंगाराम को दिया मगर मैं अपने आप पर अफसोस करता हूँ कि मैंने सारा जीवन परमार्थ के खब्त में व्यतीत किया। लोगों को भी उपदेश करता रहता हूँ। अपने आप से पूंछता हूँ कि कि यह ठीक हुआ है या नहीं। ख्याल आता है कि किसी के दुख को महसूस करना या अपने घरेलू या सामाजिक जीवन में अपने स्वार्थ को देखना क्या यह ममता नहीं है। यह ममता है। शायद शरीर छूटने के बाद चली जायगी।

मैं जीवन भर फूंक मार मार कर चला हूँ मगर मन ऐसा शत्रु है कि कोई न कोई उपद्रव मचाता रहता है। मैंने बड़ा अभ्यास किया है। बीन सुनाता रहा। अनेक प्रकाश देखे। भाषणों में बाल की खाल उतारदी अब दाता से प्रार्थना है कि ऐ दाता ! जब तक होश है तेरे होने से इन्कार नहीं हो सकता।

यह शब्द दादादयाल का है उन्होंने जिस अनुभव के आधार पर यह शब्द लिखा यह उनको पता होगा। मैं निज अनुभव के आधार पर कहता हूँ कि ममता नहीं जाती।

ममता जाती नहीं मेरे मन से ॥
मेरा कोई न मैं हूँ किसी का, मुझ में कुछ नहिं मेरा।
समझ बूझ ऐसी काम न आई, करता हूँ मेरा तेरा ॥

कहने को तो मैंने भी बहुत कुछ कहा और कितने ही सत्संग कराये मगर अनुभव ने यह सिद्ध किया कि मैं एक चेतन का बुलबुला हूँ जो मालिक के अस्तित्व के क्षोभ के क्रम में पैदा होता है। मैं ब्रह्म नहीं बना और नहीं सन्त बना हूँ। इतना ज्ञान होते हुये भी फिर भी पता नहीं मेरे दिमाग को क्या हो जाता है। यही समझ

आई कि अपने वश में कुछ नहीं है। मजबूरी है और लाचारी है। यह जानता हुआ भी कि अपने वश में कुछ नहीं है फिर भी चाह रहती है कि ममता चली जाय।

ममता के जाने से क्या लाभ ? परम शान्ति, विक्षेप का न होना। इसमें परमसुख है और यही हर एक आदमी का पहिला रूप है:— परम तत्व, आधार निजस्वरूप, कूटस्थ। मनुष्य के अन्तर किसी वस्तु की खोज है। दूसरे के बारे में तो मैं जानता नहीं मगर मेरे अन्तर तो बचपन से ही थी और अब भी है। मेरा अस्तित्व (Self) क्या चाहता है ? सब कुछ भूल जाना। इसके पश्चात सर्व व्यापकता में न 'मैं है न 'तू' है।

लिखने को तो दातादयाल जी ने बहुत कुछ लिख दिया। मैंने भी बहुत कुछ कहा मगर किसी सन्त के बारे में राय प्रगट करना महा पाप है। मैं अपनी ओर देखता हूँ। मुझे लोग परम सन्त कहते हैं और मैं भी अपने आपको अनामी धाम से आया हुआ अवतार कह देता हूँ। कहां गया तेरा अवतारपना ! इसलिये सिवाय शरणागतम् के और कोई चारा नहीं है।

पिलादे भक्ति का ऐसा प्याला, ममत्व अपने तन का खोदूं।
न बुधि रहे न सुधि रहे, कुछ अहमपना सारा मन का खोदूं॥
जपूं तपूं और भजूं न सुमिरूं, न योग मुक्ति के पन्थ दौडूं।
न नाम की माला हाथ में हो, हिये की माला का मनका खोदूं॥
वैराग क्या जिस में राग आये, वह त्याग क्या त्याग में फंसाये।
न बंध मुक्ति का हो खटका, विवेक घर और बन का खोदूं॥
न दुख की दुविधा न सुख की चिन्ता, न चित को चिन्ता का भय हो किंचित।

न ज्ञान ध्यान की हो इच्छा, विचार साधन जतन का खोदूं॥
न द्वन्द और निर्द्वन्द का हो झगड़ा, न द्वैत अद्वैत का बखेड़ा।
भुका के सर राधास्वामी पद में, विचार तक दास पन का खोदूं॥

मैं अपने आप को सत्संग कराता रहता हूँ। गिरता रहता हूँ। जब तक जीवन है सिवाय शरणागतम् के और कोई चारा नहीं है।

औगुन हारा गुन नहीं, मनका बड़ा कठोर।
ऐसे समरथ साइयां, मुझे लगाओ ठौर॥
औगुन किये तो बहु किये, करत न लागी बार।
भावै 'फकीर' को बख्शिये, भावै गरदन मार॥

ऐ दाता! चेतनता आई। एक जनून सिर पर सवार हुआ। अभी तक वह समाप्त नहीं होता। अच्छा! तेरी इच्छा पूर्ण हो।

हैरानी

(ले० महर्शि शिवव्रत लाल जी महाराज का शब्द)

फायदा हासिल हो क्या इन्सान को तदबीर से।
देखते हैं हम बशर मजबूर हैं तकदीर से॥
ख्वावे दुनियां की हमारी जिन्दगी ताबीर[1] है।
किस परेशानी में हैं इस ख्वाव की ताबीर से॥
आइने के जर्रे जर्रे में है निहाँ और अयाँ।
खुद नजर आता है तू आइने की तसबीर से॥
होके कामिल खुद बानया हमको नाकिस जान कर।
तू बतादे किस तरह हम बच सकें तकसीर से॥
पर्दा जुल्मत[2] से भी जाहिर है नूरे जिन्दगी।
शब को यह उकदा[3] खुला था चाँद की तनवीर[4] से॥
दाम[5] था पिनहां जो हलकों[6] में तुम्हारी चश्म के।
देखकर हम बंध गये हैं इश्क की जन्जीर से॥
जिन्दगी की माँगी जब हक से दुआ-मौत आगई।
जान आफत में पड़ी है उसकी इस तासीर से॥
देखकर काबे को खाली बुतकदां में आगये।

देखिये निभती है कैसी उस बुते बेपीर से ।।
क्यों फड़क जाये न पढ़कर मेरी गजलें नाजरीन ।
वहदे के आलम का नक्शा है अयाँ तहरीर से ।।

१. फल, २. अंधेरा, ३. भेद, ४. चाँदनी ५. फन्दा, ६. घेरा

उतल भक्त की कथा

कोई न कोई शिकायत रहती है

(ले० महर्षि शिव ब्रतलाल जी महाराज)

यह बहुत पुरानी कहावत है—"यह उपदेश भगवान ने जीतवन के समय में उतल भक्त के बारे में कहा था।"

यह व्यक्ति सर वस्ता में रहता था। उसके साथ पांच सौ की जमात थी। एक दिन अपने शिष्यों को साथ लिये हुये धर्म की व्याख्या सुनने के उद्देश्य से रेवत नामी भिक्षु के मठ में गया और रेवत को दण्डवत करके उसके पास बैठ गया। यह भिक्षु शान्तिचित्त का आदमी था। ध्यान की अवस्था में रहना उसको अधिक प्रिय था। उसकी वृत्ति सिंहवत थी। इसलिये वह उतल से कुछ नहीं बोला। उतल को क्रोध आया कि— 'इस महापुरुष ने एक बात भी नहीं कही—" और उठकर शारीपुत्र के पास गया, जो दूसरा भिक्षु था। जब उसने उसको नमस्कार किया और सम्मान के साथ एक ओर खड़ा हुआ। शारीपुत्र ने पूछा—"तुम कैसे आये हो? स्वामिन! मैं अपने चेलों के साथ महात्मा रेवत के पास धर्म की व्याख्या सुनने गया था मगर उसने एक बात भी नहीं कही। मुझ को क्रोध आ गया और मैं यहां चला आया। आप धर्म की चर्चा कीजिये।

महात्मा शारीपुत्र ने कहा—"बेटे बैठ जा" और उन्होंने आध्यात्मिक सिद्धान्त के विषय में लम्बी चौड़ी व्याख्या की।

तब भक्त ने कहा अध्यात्मिक सिद्धान्त और अध्यात्म फिलोस्फी सूक्ष्म और कठिन है। महात्मा ने इस विचार पर बहुत कुछ कहा मगर इससे हमको क्या लाभ है। यह कर वह क्रोधावस्था में उठा और माननीय 'आनन्द' के पास गया। जब आनन्द ने उसके आने का कारण पूछा, वह बोला—'मैं रेवत जी के पास धर्म सुनने गया था। वह कुछ न बोले। क्रोधित होकर मैं शारीपुत्र जी के पास इसी ध्येय से गया। उन्होंने आध्यात्म के विषय में कठिन और लम्बी चौड़ी बातें कही जो हमारी समझ से बाहर थीं। मैं क्रोधित होकर तुम्हारे पास आया हूँ। तुम धर्म की व्याख्या करो।

आनन्द ने कहा—'बैठ जाओ और सुनो। आनन्द ने उनको जानने योग्य बातें सुनाईं मगर धर्म की बातें सावधानी के साथ बताईं।"

इस पर उनको क्रोध आया और वह भगवान बुद्ध के पास पहुँचे और प्रणाम करके एक ओर बैठ गये। भगवान ने पूछा– बेटे! तुम यहां कैसे आये?" "गुरु देव! "हम धर्म की चर्चा सुनने को आये हैं।" " बहुत अच्छा! तुमने धर्म की चर्चा सुनी?"

भगवान! हम रेवत जी के पास गये। वह कुछ न बोले, तब क्रोधित होकर हम शारीपुत्र के यहां गये। उन्होंने अध्यात्मिक (रूहानियत) की चर्चा की जिसको हम न समझ सके। क्रोधित होकर हम आनन्द जी के पास आये। आनन्द जी ने बहुत ही कम धर्म की व्याख्या की हम क्रोधित होकर यहाँ आये।

जब गुरु ने यह बातें सुनी तो वह बोले-अतुल! यह कोई नई बात नहीं है। प्रचीन काल से लोग कम बोलने वालों और बहुत बोलने वालों और चुप रहने वालों की शिकायत करते आये हैं। न किसी की बिल्कुल प्रशंशा ही होती है और न किसी का विरोध ही किया जाता है। जन साधारण का तो कहना ही क्या है। किसी राजा की प्रशंशा की जाती हैं ओर किसी राजा की बुराई की जाती

है। दुनियाँ में ऐसे आदमी भी तो हैं जो पृथ्वी, चन्द्रमा, सूर्य को भी बुरा भला कहते हैं यहाँ तक कि आत्म ज्ञानी बुद्ध तक की भी शिकायत करने वाले मौजूद हैं, जो चार तरह की जनता (भिक्षु, भिक्षुकी, उपासक, उपासिको) के बीच बैठा हुआ धर्म की व्याख्या करता है। अज्ञानी की प्रशंसा और विरोध वास्तव में निरर्थक है। हाँ ज्ञानी और विद्वान जिसकी बुराई करें उसकी बुराई ठीक होती है और जिसकी प्रशंसा करें उसकी प्रशंसा ठीक होती है। यह कह कर भगवान ने यह गाथा गाई:—

कम सखुन की है शिकायत कि वह कम कहता है।
और चुपकी है मजम्मत कि वह चुप रहता है॥
बात कोई गर ज्यादा करे बदनाम है वह।
या वह गोखाम है, बेहूदा है नाकाम है वह॥

कोई ऐसा नहीं तारीफ न होगी जिसकी।
कोई ऐसा नहीं की जाती नहीं जिसकी बदी॥
चाहे जिस तरह अमल से रहे आकर इन्सान।
उससे गाफिल नहीं होगी कभी दुनियाँ की जबान॥

होगा वह पाक बशर, नेक दिल व खुश किस्मत।
जिस की करते हैं जिन दानिश व मलक सब मदहत॥
पाक है पाकों में वह पाक है लासानी है।
बाखबर दाना है कामिल है वह और ज्ञानी है॥
वह मुकम्मिल है तुम भी उसे मुकम्मिल समझो।
सबमें अफजल है वह, तुम भी अफजल समझो॥

जिस समय यह उपदेश समाप्त हुआ, ५०० भक्तों को पहिली दीक्षा का फल उस समय प्राप्त हो गया।

प्रवचन

परमदयाल परमसंत फकीरचन्द जी महाराज
(मानवता मन्दिर होशियारपुर १३-८-७१)

राधास्वामी धरा नर रूप जगत में,
गुरु होय जीव चिताये ।
जिन जिन माना बचन समझकर,
तिन को संग लगाये ॥

आज कृष्णा जन्माष्टमी है । मुझे अपना बचपन याद आता है जब मैं राम नौमी के दिन या कृष्ण जन्माष्टमी के दिन बड़े प्रेम और श्रद्धा से झूला झुलाया करता था । मेरा जीवन बड़े प्रेम से व्यतीत हुआ । रामायण के कथन के अनुसार—"नाना भांति राम अवतारा" मन चाहता था कि उस मालिक को जिसने राम या कृष्ण का अवतार लिया है उसको मानव रूप में अपनी आंखों से देखूं । मेरा एक दृश्य मुझे हुजूर दातादयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी के चरणों में ले गया । मैंने उनको राम या कृष्ण समझकर उनकी पूजा की । उन्होंने मुझे राधास्वामी मत की शिक्षा दी । शायद मैं इस शिक्षा को भी ग्रहण न करता यदि मेरा विश्वास टूट जाता । मैं अवतार पूजक था और राधास्वामी मत की बाणी में भी लिखा है कि राधास्वामी दयाल जीवों को पार करने के लिये इस जगत में अवतार लेकर आये । इसलिये मेरा विश्वास बना रहा ।

अब सवाल है कि क्या अवतार होता है । कोई विशेष शक्ति जब किसी विशेष रूप से किसी व्यक्ति द्वारा प्रगट होती है तो मानव जाति उसे बड़ा समझकर उसे एक प्रकार का अवतार समझ लेती है । अवतार का अर्थ है उतरा हुआ । जब कभी यह हस्तियां (अस्तित्व) प्रगट होती हैं तो ग्रहचाल भी उनके अनुकूल हो जाती है । जैसे श्री कृष्ण जी अष्टमी की रात्रि के बारह बजे पैदा हुये ।

राधास्वामी दयाल (स्वामी शिव दयालसिंह जी) भी इसी अष्टमी के दिन रात्रि को १२ बजे पैदा हुये थे। गुरु नानक साहब पूर्णमांशी के दिन पैदा हुये थे। महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज शिव रात्रि को पैदा हुये। मैं मगहर महिने के नौमी शुल्क पक्ष में पैदा हुआ। यह बड़ी बड़ी हस्तियां विशेष-विशेष मिशन लेकर आती हैं। मैं तो यह कहता हूँ कि बुराई का भी अवतार होता है। याहा खां ने अत्याचार स्वार्थ और राज्य की इच्छा की अति करदी। यदि मैं उसे बुराई का अवतार कहदूँ तो गलत नहीं है। महात्मा गांधी अपने समय में एक विशेष मिशन लेकर आये थे। वह भी अवतार थे। हर एक बड़ी शक्ति कोई विशेष मिशन लेकर इस दुनियाँ में आती है। मैं तो याहा खां को भी बुरा नहीं कहता। आखिर संसार का भार तो उतरना ही है। दुनियां का अत्याचार बहुत बढ़ चुका है। यह भी ईश्वर की दया है कि याह्या खां के कारण तीसरा (World war) विश्वयुद्ध हो गये।

मांग और पूर्ति (Demand and Supply) के नियम के अनुसार अवतार होते हैं। मैं तो न किसी को बुरा कहता हूँ न किसी को अच्छा, क्योंकि अच्छे में भी और बुरे में भी वही शक्ति है। नेकी में भी और बदी में भी वही शक्ति काम करती है।

कोई भी व्यक्त बुरा न माने। संतों ने और कबीर साहब ने अपनी बाणियों में लिखा है कि वह मालिक न जन्मता है और न मरता है और न अवतार लेता है। कबीर साहब का एक शब्द है:-

साधो कर्त्ता कर्म से न्यारा।
आय न जावे मरे नहिं जीवे, ताको करे विचारा॥

मैंने सारा जीवन सचाई की खोज में खो दिया। कहां मैं अवतारों को मानने वाला और कहां मेरी भावना मुझे दातादयाल के चरणों में ले गई। और कहां उन्होंने मुझे संत मत की शिक्षा दी। और स्वामीजी और कबीर साहब का जीवन चरित्र वर्णन किया।

कबीर साहब कहते हैं कि कर्त्ता कर्म से न्यारा है। न वह आता है न जाता है न जन्मता है और न मरता है।

राम का पिता जो दशरथ कहिये, दशरथ कौने जाया।
दशरथ बना राम का दादा, कहो कहां ते आया॥
राधा रुकमिन कृष्ण की रानी, कृष्ण दो.....
सोलह सहस गोपी उन भोगी, भयो काम को केरा॥

ऐ भारत वर्ष के धार्मिक जगत वालो! यदि मैं ने सारा जीवन सचाई की खोज में खो दिया तो क्या मैं सत मार्ग पर नहीं था। मैं देखना चाहता था कि सचाई क्या है। सचाई यह है कि जो व्यक्ति अवतार लेकर आता है वह वह नहीं है। इसी सिद्धान्त को देखते हुये न कबीर साहब वह हैं न राधास्वामी दयाल वह है। मैं निर्पक्ष होकर बोल रहा हूँ। क्या संतों ने काम नहीं होगा? फिर अवतार पूजा या गुरु पूजा के बजाय यह लोग जो कुछ कह गये उस पर क्रियात्मक होने में बहतरी है। और पार उतारा है। गुरु पूजा और अवतार पूजा में पार उतारा नहीं है। स्तुति चाहे तुम दातादयाल की करते रहो? चाहे बाबा सावनसिंह की चाहे फकीरचन्द की तुम कर्म के चक्र से निकल कर अपने घर नहीं जा सकते।

ओह! दाता! आपने आज्ञा दी थी कि शिक्षा को बदल जाना मगर यह नहीं बताया था कि कैसे बदलना है। मैंने जो अनुभव किया वह कहता हूँ सम्भव है गलत हो। कबीर ने तो राम और कृष्ण का खंडन कर दिया मगर मैं कहता हूँ कि क्या कबीर साहब ने काम नहीं भोगा? उन्होंने स्वयं अपनी बाणी में कहा है—

नारी तो हम हूँ करी, जाना नाहिं विकार।
जब जाना तब परि हरी, नारी बड़ी विकार॥

क्या संत बीमार नहीं होते? मैं कर्म भोग वश आवाज दे जाना चाहता हूँ कि अवतार और गुरु की पूजा के बजाय उनकी शिक्षा को ग्रहण करो तब तुम्हारा बेड़ा पार होगा। अवतार पूजा और गुरु

पूजा ने मानव जाति को बांट दिया है। कोई राम का पुजारी है कोई कृष्ण का, कोई फकीरचन्द का, कोई राधास्वामी मत का है तो कोई नानक मत का है। अज्ञान और भ्रम के कारण मानव जाति बट गई। झगड़े होते हैं और सिर फटते हैं। पोलीटिकल लाइन को तो छोड़ो, घरों में भाई भाई का झगड़ा, बाप बेटे का झगड़ा, स्त्री पुरुष का झगड़ा है। यह संसार दुखों की खान है। मेरा तेरा और माया का चसका हमारे अन्तर भर दिया गया है।

मैं अब न अवतार पूजक रहा हूं और न गुरु पूजक रहा हूँ। मैं अवतारों और गुरुओं की रहनी और बाणी को मानने वाला हूँ। यही बात राधास्वामी दयाल ने भी कही है—

राधास्वामी धरा नर रूप जगत में, गुरु होय जीव चिताये।
जिन जिन माना बचन समझकर, तिन को संग लगाये॥

राधास्वामी का अर्थ मनुष्य नहीं हैं। सुरत और शब्द के मिलाप का नाम राधास्वामी है। जिस तरह से समय की आवश्यकता के अनुसार राम या कृष्ण या महात्मा गांधी या हजरत मुहम्मद या महात्मा बुद्ध आये उसी तरह अब आवश्यकता इस बात की है कि मानव जाति में एकता हो। यह सतों का मार्ग है कि वह जो असली मालिक है जिसके नाम पर मानव जाति अज्ञान के कारण विभिन्न धर्मों में बट गई है, वह न तो जन्म लेता है और न मरता है। हिन्दू शास्त्र उसे परम तत्व, चेतन्य, महाप्रभू, कूटस्थ, आधार कहते हैं। कोई इसको जात (निज स्वरूप) कहता है।

हमें इस दुनियां में क्या करना है ? श्री कृष्ण का जीवन देखो। जहां रणक्षेत्र से भागने की आवश्यकता हुई, वहां रणछोर स्वामी कह लाये। कहीं पहाड़ को धारण करने वाला होने से गिरधारी नाम रक्खा गया। कहीं मक्खन चोर के नाम से याद किये गये। उनकी तरह जीवन को adjust (सम) करने की आवश्यकता है। गृहस्थ में पोलिसी से काम लेना पड़ता है। कहीं झूंठ भी बोलना पड़ता है।

तुम देखो युद्ध के समय कृष्ण जी ने कैसी-कैसी पौलिसी से काम लिया है। क्यों ? क्योंकि उनका अवतार ही जीवन के adjustment के लिये हुआ था। संतों का अवतार जीव को जन्म मरण के चक्र से बचाने को होता है। संत बाणी कहती है :—

कर सत्संग सार रस पाया, पी पी तृप्त अघानी ॥

स्वामी जी महाराज ने राधास्वामी मत वालों को क्या सार रस दिया मुझे पता नहीं। मुझे जो सार रस मिला वह कहता हूँ कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। मैं काशमीर गया। वहाँ कई आदमियों ने मुझे यह कहा कि बाबाजी आप स्वप्न में आये और यह कहा वह कहा, मेरे मस्तक पर हाथ रक्खा और मेरी सुरत चढ़ादी मगर मैं तो गया नहीं और न मैं उन लोगों को जानता हूँ। यह सारा खेल तुम्हारे अपने मन का है। जैसे जैसे विचार और संस्कार कुछ पिछले जन्म के और कुछ इस जन्म के इंसान के दिमाग पर पड़े हुये हैं वह जाग्रत, स्वप्न और अभ्यास में दिखाई पड़ते हैं। इससे मुझे यह समझ आ गई कि सार रस क्या है।

सार है मनुष्य का अपना ही निज स्वरूप जिसको संत सुरत कहते हैं। शास्त्र उसको आत्मा कहते हैं। शब्दों का जाल है। सुरत अन्तर में रहती हुई दुख सुख को महसूस करती है। मन के संकल्प विकल्प को समझती और देखती है। वह प्रकाश में रहती हुई प्रकाश की साक्षी है। शब्द को सुनती हुई शब्द की साक्षी है। वह है सार। शेष सब असार या संसार है। जब यह सार संसार के सामने आता है तो वह सुरत इस संसार को संत मानकर उसमें फँस जाती है। संत जीवों को सर्वदा के लिये इस जन्म मरण के चक्र से निकालने के लिये आते हैं। मैं कोशिश करता रहता हूं कि मैं अपनी सुरत को वहां लेजाऊँ और उसको इष्ट बनाऊँ जो जन्म मरण और रूप रंग से परे हैं। इसका नाम अकह अपार अगाध या अनामी है। संत उस देश से आते हैं और अवतार कोई किसी लोक से आता है कोई किसी

लोक से। हर एक जीव विभिन्न लोकों से वहाँ के प्रभाव लेकर आता है।

मैंने अपने कर्म भोग वश अपना अनुभव कह दिया। मैं अकह अगाध और अनामी धाम से इस चोले में आया हूं। संत सतगुरु महर्षि शिवब्रतलाल जी जिन पर मेरा पूर्ण विश्वास था कि वह सर्वाधार मालिके कुल के अवतार हैं, उन्होंने मुझे सत्संग कराकर सार रस प्रदान किया। अभी तक मैं संसार में फसा रहता हूँ। शायद मेरे कर्म होंगे अथवा जिस काम को पूरा करने के लिये मैं आया हूँ या जिस काम के लिये श्री कृष्ण आये थे या जिस काम के लिये याह्या खां आया है, वह करना पड़ रहा है। सब की अपनी अपनी ड्यूटी है।

गुरु संग प्रीति करी उन ऐसी, जस चकोर चंदाये।

गुरु संग प्रीति—गुरु पूजक भी और अवतार पूजक भी पहिले प्रीति ही तो करते हैं। यह पहिली सीढ़ी है। यदि कोई आदमी गुरु से प्रीति नहीं करेगा तो वह उसकी बात को समझ न सकेगा। बाहर के गुरु से प्रीति करना पहिली सीढ़ी है। यह बच्चों का खेल है। बच्चा माँ से प्यार करता है मगर उसको यह समझ नहीं है कि माँ क्या कहती है या क्या कहना चाहती है और बच्चे को कहां पहुँचाना चाहती है। लेकिन वह पहुँचेगा कब! जब वह मां से प्रीति भी करेगा और उसकी आज्ञा भी मानेगा वरन् उसका जीवन नहीं बन सकता। इसलिये सत्संग है।

गुरु बिन कल नहिं पड़त घड़ी एक, दम दम मन अकुलाये।

मन चंचल है। उसकी चंचलता को दूर करने के लिये प्रेम करना आवश्यक है। बाहर के गुरु से प्रेम करने से पूर्ण रूप से चंचलता दूर नहीं हो सकती। मैंने बहुत कुछ करके देखा है। मैंने भी दाता-दयाल जी को झूले में झुलाया। क्या उस समय मेरे मन की चंचलता

दूर होगई थी। इसके बाद भी मेरे मन में तरह-तरह के स विकल्प उठा करते थे। जब तक त्रिकुटी के स्थान पर ध्यान पक्का नहीं हो जाता, मन की चंचलता दूर नहीं हो सकती। यदि तुम्हारा ध्यान पक्का भी हो गया है फिर भी तुमको यह मन समय समय पर गिराता रहेगा। इस गिरने का इलाज है गुरु के बचन को समझना। मैंने समझा। क्या ? यह कि मन के सम्पूर्ण खेल माया हैं। जब मेरे अन्तर कोई अच्छे या बुरे विचार पैदा होते हैं तो यह ज्ञान मुझे फँसने नहीं देता। यह मेरा अनुभव है। तुम लाख भक्त बन जाओ और गुरु से प्रेम करो लेकिन यह मन समय पर तुम्हारे कर्मो के अनुसार या भोजन के प्रभाव के अनुसार या वाह्य प्रभाव के अनुसार तुमको विचलित करेगा।

मैं अब कश्मीर गया था। भंडारो, गोपालदास और शान्ती आदि मेरे साथ थे। यद्यपि यह मेरे साथ अत्यन्त प्रेम करते हैं लेकिन फिर भी किसी समय भंडारो का क्रोध का मूड होता है कभी शान्ती का और कभी गोपालदास का। गोपालदास जितनी मेरी सेवा करता है और प्रेम करता है मेरे विचार में इतना और कोई नहीं करता। करते तो सब ही हैं मगर इसका त्याग बहुत अधिक है। फिर भी यह परिस्तितियों वश क्रोध में हो जाता है। क्या कहूँ मैं स्वय आजाता हूँ। इस लिये मैं सत्संगियों की गलती को हमेशा टाल देता हूँ और क्षमा और भूल जाना (Forgive and forget) के सिद्धान्त पर चलता हूँ और अपने आपको ऐसे मूड में नहीं आने देता क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह सब मन के खेल हैं। हैं नहीं मगर भासते हैं। यह है सार तत्व।

जब गुरु दर्शन मिले भाग से, मगन होता जस बछड़ा गाये।

तुम बेशक गुरु से ऐसा प्रेम करो जैसे गाय का बछड़े के साथ होता हैं मगर यह मन फिर भी गिरता रहेगा। कोई महात्मा अपने जीवन को पबलिक के सामने पेश नहीं करता। यदि आजकल

के महात्मा या जो पहले हो चुके हैं अपने अपने क्रियात्मक जीवन पबलिक के सामने पेश करते और और अपने अन्तर उठने वाले विचार बताते तो इनके यह सब आडम्बर समाप्त हो जाते।

ऐसी प्रीति लगी जिन गुरु मुख, सो सो गुरु अपनाये।

जो व्यक्ति गुरु से ऐसा प्रेम करता है गुरु भी उसको रहस्य बता देता है। यह रहस्य जो मैंने खोला है वह वर्षों गुरु की सेवा करने के बाद मिलता था। पिछले सन्तों ने इस रहस्य को पर्दे में रक्खा मगर मैंने इसे खोल दिया क्योंकि मेरी समझ में यह आगया कि यह स्टष्टि कर्म क्षेत्र है। जैसा करोगे वैसा ही मिलेगा। यदि मैं इस भेद को प्रगट न करता तो लोग मुझे चमत्कारी समझकर कि मैं इतना करनी वाला हूं कि लोगों को मरते समय साथ ले जाता हूँ, लोगों को डूबते से बचा लेता हूं, तो लोग मुझे धन देते और मान करते। गुरु के पर नहीं होते मगर चेले उनके पर लगा कर उड़ा देते हैं। जैसे कि एक महात्मा पिछली आयु में बड़े बीमार हो होगये। पेशाव में खून आने लग गया। चेलों ने पर लगाये कि पाकिस्तानियों का खून लिया हुआ है उनको अपना खून दे रहे हैं।

अभी हाल में ही एक महात्मा का आपरेशन हुआ। चेले कहने कि महाराज जी ने कहा कि आपरेशन के समय मुझे क्लोरोफार्म मत देना। मैं समाधि में चला जाऊँगा। सच और झूठ के बारे में मालिक जाने। मेरे बारे में कितने ही आदमी कितनी ही बातें करते हैं मगर मैं ऐसा प्रोपेगण्डा करवा कर गलत मान नहीं लेना चाहता। यदि लेता हूँ तो यह मेरा कुकर्म बन जायगा और मैं उससे निकल नहीं सकूंगा। मैं गुरु मत के इस पाखण्ड जाल को तोड़ने के लिये आया हूँ। यह ग़लत गुरु इल्म है।

गुरु चेला व्यौहार जगत में, झूठा बरत रहा।
गुरु तो मान प्रतिष्ठा चाहे, चेला स्वारथ संग बंधा॥

पाखण्डी गुरु और लोभी चेला, दोऊ नर्क में ठेलम ठेला ॥

मैंने इसलिये इस भेद को खोला है। मैं जानता हूँ कि केवल सत्यता प्रिय आदमी ही मेरी इज्जत करेंगे, सर्वसाधारण नहीं। कश्मीर में सैकड़ों लोग मेरे पास आये, बड़े प्रेम से मिले। मेरे गुरु-भाई गोविन्द कौल जी के वह लोग बड़े प्रेमी हैं। वह लोग बड़े प्रेम से अपने घर ले जाते और खाना खिलाते। गोविन्द कौल जी हमसे बहुत प्रेम करते हैं। उन्होंने हमें ११०) श्री नीलकंठ ने ५०) दिये और एक वकील साहब ने २०) रु० तो दिये किन्तु उन्होंने प्रेम बहुत किया।

मैं तो संसार में सचाई का अवतार लेकर आया हूँ। मैं धन इकठ्ठा करने या मान लेने नहीं आया।

हुजूर महाराज राय सालिगराम साहब ने पंथ चलाया था। इसलिये उन्होंने अपनी बाणी को इतना रोचक बनाया कि लोग स्वामी जी की शरण में आजांय। मैं निर्भय होकर कह रहा हूँ कि मुझे पन्थ चलाने की आवश्यकता नहीं। मेरा पंथ है इन्सानियत।

तन की लगन भोग इन्द्रिन के, छिन में सब बिसराये।

प्रेम की लगन में यह सब समाप्त हो जाता है। (श्री हजारी लाल की ओर संकेत करते हुये) जैसे तुम्हारा भाई बीमार है। उसके साथ तुम लोगों का जितना २ प्रेम है उतना उतना त्याग या बलिदान तुम उसके लिये कर रहे हो। त्याग या बलिदान वही कर सकता है जिसमें प्रेम हो। मैं गुरु की सेवा करता हूँ। धन का और समय का वलिदान करता हूँ। तो गुरु सेवा है कुरबानी करना मगर सब लोग अपने अपने स्वार्थ के लिये कुरबानी करते हैं।

गुरु की मूरति बसी हिये में, आठ पहर गुरु संग रहाये।

अपने गुरु के रूप को अपने अन्तर में रक्खा करो। आठ पहर तो तभी गुरु को साथ रख सकते हो। आजकल गुरु नाम देते हैं

मगर फिर कई कई वर्ष तक गुरु के पास बैठने का अवसर नहीं मिलता।

ऐसी गुरु भक्ति करी जिन पूरी, ते ते नाम समाये।

जब तक कोई आदमी यह समझता रहेगा कि उसका गुरु होशियारपुर, व्यास, या आगरा या अन्य जगह रहता है उसको नाम की प्राप्ती नहीं है। गुरु को हर समय अपने अंग संग समझो। मगर इससे पहिले बाहरी गुरु के सत्संग की आवश्यकता है। क्या कोई महात्मा या गुरु तुमको ऐसी सच्ची बात बताता है? सब तुमको अपने डेरे, धाम या नाम के साथ बाँधते हैं। मैं भी दातादयाल के साथ बंधा हुआ था। उन्होंने कहा था:—

फकीरा! गुरु तो तेरे पास।
तेरे तन में तेरे मन में, तेरे साँसों सास॥

लेकिन मुझे समझ नहीं आती थी। यह समझ मुझ को आप लोगों से आई। वह कौन सा गुरु है जो हर समय साथ रहता है।

सच पूछो तो ऐ मानव! गुरु तेरा अपना ही मन है। इसी भ्रम के कारण मानव जाति बंट गई। देवी देवता, राम, कृष्ण और गुरु भी तुम्हारा अपना ही मन है। यह सारा मन का ही खेल है और मन ही अवतार लेता है। जो इससे निकल जाय वह अपने आदि घर पहुँच सकता है वर्ना नहीं।

स्वांति बूंद जस रटत पपीहा, अस धुनि नाम लगाये।

सुमिरन ध्यान पक्का होना चाहिये। एक तो मुंह से नाम जपते हो। एक ऐसा विश्वास हो जाये कि गुरु तुम से अलग है ही नहीं। मुझे ख्याल ही नहीं आया कि हुजूर दातादयाल जी चोला छोड़ गये हैं।

मन तू शुदी तो मन शुदी, न मैं दीगरम् न तू दीगरम्।

जब यह अवस्था आ जाती है, फिर उसको नाम की प्राप्ति हो

हो जाती है। मनुष्य मन को छोड़कर शब्द ब्रह्म में चला जाता है

नाम प्रताप सुरत अब जागी, तब षट शब्द सुनाये।

मैं बहुत ऊँचा चला गया हूँ। अब दुनियां की वस्तुयें मुझे अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकती। मैंने श्रीकृषक जी को यहां इस लिये बुलाया है कि आप लोग उनके सत्संग से अपनी पहिली श्रेणियां पूरी करलें मगर यह तब होगा जब तुमको इस चक्र से निकलने की आवश्यकता होगी।

मैं काश्मीर गया। जोभी मेरे पास आया दुनियाँ के दुख लेकर आया। मैं हैरान हूँ कि कुदरत कैसे मेरी सहायता करती है। पिछली बार मेरे पास एक युवा लड़की आयी। उसके पति ने उसे छोड़ा हुआ था। वह एम० ए० में पढ़ती थी। मैंने उसको तरीका बताया कि ऐसा ऐसा किया करो। तुम्हारा पति तुम से प्रेम किया करेगा। अब जब मैं गया तो मेरी खुशी की कोई सीमा न रही। जब वह गोद में लड़का लेकर आई और कहने लगी कि बाबा जी! अब मेरे पति का मेरे साथ बहुत अच्छा व्यवहार है।

यह तो कुदरत ने मुझे मेरे पिछले कर्मों के कारण यश देना था वरना मेरे पास कुछ नहीं है? मैंने इसका अनुचित लाभ नहीं उठाया। मैंने उस लड़की को गुरु बना दिया कि बेटी! अपने अन्तर अपने पति से सच्चा प्रेम रक्खो। तुम लोग तो सच्चे हृदय से प्रेम नहीं करते। स्त्रियां चाहती तो यह हैं कि हमारे बच्चे क्रोध न करें मगर स्वयं क्रोध में आकर कहती हैं कि क्रोध मत करो। जब वह स्वयं क्रोध करती हैं तो बच्चे कैसे क्रोध न करेंगे। तुम्हारा अपना जीवन क्रियात्मक नहीं है। यह है सार भेद।

शब्द पाय गुरु शब्द समानी, सुन्न शब्द सत शब्द मिलाये।

यह अभ्यास की दशा है। जब यह विश्वास हो जाता हैं कि गुरु मुझसे अलग नहीं है फिर उसके लिये आगे जाना अधिक कठिन नहीं रह जाता।

अलख शब्द और अगम शब्द ले, निज पद राधास्वामी आये। राधास्वामी क्या है ? अपने आप को वहां रखना जहाँ न शब्द है न प्रकाश है और न मन है। उसका मुझे अनुभव है मगर वहां अभी तक मुझ से ठहरा नहीं जाता। मैं अलख और अगम शब्द का ही साधन करता रहता हूँ।

पूरा गुरु पूरी गति पाई, अब कुछ आगे कहा न जाये।

स्वामी जी का पूरे घर और पूरे गति से क्या अभिप्राय है यह वह जानते होंगे। मैं पूरी गति यह समझता हूँ कि जब कभी मैं अकेला बैठता हूँ तो सुरत बेसुधि हो जाती है। पहिले शरीर से बेसुधि होता था। फिर मन से बेसुधि होता था फिर आत्मा से बेसुधि होता था। अर्थात आदि में भी खामोशी थी और अन्त में भी खामोशी है। जीवन क्या है ?

लब खुले और बन्द हुये यह राजे दिन्दगानी है।

इस ज्ञान से कि मैं सब संसार कुदरत का खेल है, उसी से सब कुछ उत्पन्न होता है और उसी मैं समा जाता है। यह दौड़ धूप कि हाय मुझे राम मिलजाय या कृष्ण मिल जाय या धन मिल जाय, यह सब समाप्त हो गया है इस अवस्था का नाम है विदेह गति। देह में में रहकर देह को भूले रहना, मन में रहते हुये मन को भूले रहना प्रकाश में रहते हुये प्रकाश को भूले रहना। वह क्या अवस्था है जहां बोलने, सुनने और विचार करने की आवश्यकता नहीं। वह है जो है It is what it is गूंगे का गुड़ है और खोज समाप्त हो जाती है।

दयाल प्रिंटिंग प्रेस
अलीगढ़

❀ मनुष्य बनो के नियम ❀

१—शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार, सहनशीलता और सयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक, उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म पन्थ या सम्प्रदाय खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जांय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ-साफ अवश्य लिखना चाहिए। उत्तर के लिए जवाबी कार्ड अवश्य आना चाहिये। वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायेगी।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुंचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले वह अंक निकलने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले वह अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेज दी जायगी।

९—नमूना ३५ पैसे के टिकट मिलने पर ही भेजा जा सकेगा।

१०—एक वर्ष से कम के ग्राहक नहीं बनाये जायेंगे। जो किसी भी मास से बन सकते हैं। ४.५० मूल्य समय पर पेशगी भेजना होगा।

११—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहियें। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ-साफ लिखना चाहिये और पते की तबदीली भी।

ऐडीटर-मैनेजर—मुन्शीलाल गोविल (विश्व प्रेमी)

हमारे यहां की पुस्तकें :—

	न० पैसे
१—मनुष्य बनो हिन्दी	६२
२—जागृत जीवन	७५
३—मानव धर्म प्रकाश उर्दू	१—५०
४—सन्त मत सार हिन्दी	१—००
५—फकीर शब्दावली ,,	७५
६—आत्मिक आदर्श ,,	७५
७—सार भेद सचाई ,,	३६
८—आकाशी रचना उर्दू	६०
९—सांई की मौज	६०
१०—शब्द सार हिन्दी	७५
११—अनहद टकार-झंकार	५०
१२—जीवनी दातादयालजी उर्दू	५) ६)
१३—मनोनियम हिन्दी	१—००
१४—सांई की सदा हिन्दी	५०
१५—सांई के सौ ख्याल	५०
१६—सतगुरु-सन्देश	७५
१७—विष्णु संहिता हिन्दी	१—५०
१८—शिव संहिता ,,	१—५०
१९—दयाल संहिता उर्दू	७५
२०—सुमेरु पर्वत	१—५०
२१—दाता दयाल शब्द संग्रह	६२
२२—योगी हिन्दी	२५
२३—शब्द विद्या हिन्दी	१५
२४—नया अवतार निरंगार	१५
२५—धर्म सुधार हिन्दी	७५
२६—आगा को बढ़ाओ हिन्दी	२५
२७—निष्कलंक अवतार हिंदी-उर्दू	
२८—विश्व हितैषी उर्दू	५०
२९—विश्वप्रेमी ,,	१—५०
३०—Key to Freedom Eng.	१) ५०
३१—जगत कल्याण, जगत निस्तार	
३२—जगत उद्धार हि. उर्दू	२) १।।) १।)

३३—यथार्थ शान्ति सन्देश उर्दू	५०
३४—कानूने ख्याल हिन्दी	१—००
35—Message of Peace & Pros	15
36—Truth & Reality	.7
37—Independence Day	
M	
38—Real Independence	31
39—Letters of Data Dayal ,,	75
40—Light on Anandyog	Rs 3-00

प्रकाशक व ऐडीटर
मुन्शीलाल गोबिल (विश्वप्रेमी)
'मनुष्य बनो' कार्यालय
परम दयाल कम्पाउन्ड, पेच जामाजी,
यू० एस० जैन रोड, अलीगढ यू० पी०

Regd. No. A—808

कृपया न मिलने पर निम्न पते पर लौटा दें। RS.

ग्रा० सं० "मनुष्य बनो कार्यालय"
परम दयाल कम्पाउन्ड, पेच जामाजी, अलीगढ उ० प्र०

श्रीमान् C. GATBAT MY. S.KER........
HINDI PANDIT
RATHORE BUILDING...
KACHAMMA GALI,
JUME RAAT BAZAR
NIZAMABAD.........